दिनांक 05 दिसम्बर, 2011 को आयोजित लखनऊ महोत्सव के समापन समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

————————

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ लखनऊ महोत्सव के समापन समारोह में आप लोगों के बीच आकर पर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

इस बार के महोत्सव की थीम थी——''हमें लखनऊ पर नाज और लखनऊ को हम पर''। नजाकत, नफासत और

गंगा–जमुनी तहजीब के लिये विश्व प्रसिद्ध लखनऊ में सभी सम्प्रदायों के लोग सदियों से एक साथ मिल–जुलकर रहते चले आ रहे हैं। यहाँ का रहन–सहन, रस्मो–रिवाज, शिष्टाचार, खान–पान सभी की अपनी एक अलग विशेषता है। यही सब विशेषताएं ही हमें इस पर नाज करने हेतु प्रेरित करती हैं और हम सब अपनी अनूठी संस्कृति एवं सभ्यता को पश्चिमी संस्कृति से दूर रखने का प्रयास करते है, इस पर लखनऊ को हम पर नाज है।

लखनऊ के सांस्कृतिक मेल–मिलाप का कोई सानी नही है। यह मेल–मिलाप इतना गहरा और पुराना है कि इसकी तहजीब में कौन सा तत्व कहां से इसमें समाहित हो गया, इसका पता ही नहीं चलता। यहां होली, दीवाली, ईद, बकरीद, दशहरा, क्रिसमस, लोहड़ी सभी पर्वो को लोग एक–दूसरे के साथ मिल–जुलकर मनाते हैं। कहने का मतलब है कि यहां के लोगों ने हमेशा धर्म और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सोचा है।

सच तो यह है कि लखनऊ की संस्कृति ने विभिन्न संस्कृतियों के तत्वों को और विभिन्न कलाओं को आज भी अपने में जोड़े हुए है। कथक नृत्य, शेरो–शायरी, ग़ज़ल और कव्वाली आदि पुराने–जमाने से ही इस शहर की सांस्कृतिक परम्परा से जुड़े रहे हैं। इसीलिये प्रसिद्ध उर्दू कहानीकार, श्री अब्दुल हलीम 'शरर' ने अपनी पुस्तक 'गुजिश्ता लखनऊ' में लखनवी तहजीब को एशियाई सभ्यता का विकास बताया हैं।

इस प्रकार के महोत्सव जहाँ जनमानस को अपनी धरोहर को सहजने हेतु प्रेरित करते हैं, वहीं वर्तमान प्रगति को भी देखने का अवसर प्रदान करते है। मुझे खुशी है कि इस वर्ष भी महोत्सव में प्रदेश एवं अवध की सांस्कृतिक विद्याओं की खूबसूरत तस्वीर प्रस्तुत की गई है। शिल्प मेले के माध्यम से प्रदेश की हस्त कलाओं का और विभिन्न स्थलों पर यहॉ के स्वादिष्ट व्यंजनों का भी लोगों ने आनन्द लिया है। महोत्सव के माध्यम से यहाँ की सांस्कृतिक परम्परा के साथ–साथ राष्ट्रीय

एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के मूल्यों को स्थापित करने का भी प्रयास किया जाता रहा है, जो सराहनीय है।

मुझे इस बात की खुशी है कि वीर शहीदों को सम्मान देने के मेरे आग्रह को स्वीकार कर इस बार शहीदों के लिये भी इस महोत्सव में कुछ किया गया है। इससे हमारी भावी पीढ़ी को उनके बारे में जानने और समझने का अवसर मिलेगा। यह भी प्रसन्नता की बात है कि इस बार महोत्सव में किसान भाईयों के लिये भी 'कृषि मेला' लगाया गया, जिसमें उन्हें कृषि क्षेत्र में हुई

नई खोज, उपकरण और तकनीकी का ज्ञान दिये जाने की व्यवस्था की गई थी।

लखनऊ पिछले कुछ वर्षो से बहुत तेजी से प्रगति की ओर बढ़ रहा है। यह एजूकेशन और चिकित्सा का हब बन रहा। यहाँ के लोगों में कम्प्यूटर और नेट पर कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। पर्यटन की दिशा में भी बहुत कुछ हो रहा है। लखनऊ में मेट्रों चलाने की योजना अब धीरे–धीरे साकार हो रही है।

अभी हाल ही में विदेश से एक व्यक्ति लखनऊ आये थे। उन्होंने मुझसे एक बड़ी सुन्दर बात कही कि **LUCKNOW** को अंग्रेजी में लिखकर उसका विच्छेद करें तो **LUCK** यानी खुशकिस्मती **NOW** यानी अभी बनता है। बेशक यहां के रहने वाले खुशनसीब हैं। बस एक शायर की चार लाइनों से अपनी बात खत्म करता हूँ–

इस शहर की फ़िजा का अन्दाज निराला है
तहज़ीब 'ओ' मोहब्बत को इस शहर ने पाला है

आते हैं जो यहां पर हो जाते हैं यहीं के
इस शहर ने मेहमान नवाज़ी को संभाला है।

धन्यवाद–नमस्कार